भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राचीन भारतीय वनस्पतिक धरोहर

डॉ रंजना सिंह
सहा0 प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)
नवीन शा० कन्या महाविद्यालय
गौरेला – पेण्ड्रा – मरवाही
जिला – जी० पी० एम. (छ.ग.)
पिन 495 117

शोध सारांश :–

भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यन्त समृद्ध, विविधतापूर्ण, प्राचीन और सतत् प्रवाहमान ज्ञान प्रणाली है, जो भारत में हजारों वर्षो से चली आ रही है । संक्षेप मे अगर कहे तो यह ज्ञान का वह भंडार है जो ''वसुधैव कुटुम्बम'' और ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' के भाव पर आधारित है। यही भारत की पहचान और बौद्धिक सम्पदा है । इस परम्परा में प्रकृति, जीव जगत और पर्यावरण के प्रति गहरी समझ दिखाई देती है। वनस्पति विज्ञान भी इस परंपरा का महत्वपूर्ण भाग रहा है और इसका इतिहास प्राचीनकाल से शुरु होता है जब मानव ने पौधों का उपयोग औषधि, भोजन और अन्य आवश्यकताओं के लिए करना शुरू किया। विभिन्न वेदों, उपनिषदो, संहिताओं मे पौधो का वर्गीकरण पौधे के अंगो, पौधों के जीवन और उनकी उपयोगिता का विस्तृत वर्णन किया गया है।। ये पौधे न केवल मनुष्यों की उपयोगिता के लिए आवश्यक है, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण के संतुलन और संरक्षण में अपनी अहम भूमिका निभाते है।

प्रस्तावना :–

वनस्पति विज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान है, जिसका ज्ञान अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। प्राचीन भारतीय वेदो, उपनिषदों, संहिता एवं आयुर्वेद मे वनस्पति विज्ञान की गहरी समझ, विश्लेषक और उपयोगिता का वर्णन किया गया है। भारत में प्राचीन वनस्पति ज्ञान केवल औषधीय ज्ञान तक सीमित नहीं था बल्कि धार्मिक, अध्यात्मिक और पर्यावरण संरक्षण से भी जुड़ा था। विभिन्न वेदो, पुराणों एवं संहिता में वनस्पति

की उत्पत्ति, वर्गीकरण, उपयोग आदि का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथो मे वर्णित पौधो से संबंधित ज्ञान उस समय के तपस्वी मनीषियों द्वारा प्राकृतिक वन्य क्षेत्रों मे उनके प्रवासों के क्रम में संग्रहीत जानकारियों के कारण ही संभव हो सका है, तथा बाद में इन्हीं कालों के पुस्तकों मे निहित ज्ञान ही परम्परा के रुप में परिमार्जित एवं स्थानान्तरित होता हुआ आज लोक वनस्पति विज्ञान के रूप मे सूचित किया जाने लगा। अगर सही अर्थों मे कहा जाए तो इस ज्ञान के वास्तविक संरक्षक, विशेष भौगोलिक क्षेत्र मे निवास करने वाले एथनिक (आदिवासी) समूह ही है जो वनस्पति के महत्व के परम्परिक ज्ञान को अपनी अगली पीढ़ी तक स्थानान्तरित कर उसे संरक्षित कर रहे है।

वेदो, उपनिषदों एवं पुराणो मे वनस्पति विज्ञान :–

प्राचीनकाल से ही पौधों के विषय में हमारा ज्ञान विस्तृत रहा है जो कि आज भी पहले के अभिलेखों से प्रमाणित होता है। प्राचीन ग्रंथ जैसे ऋग्वेद, अथर्ववेद, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, विष्णु पुराण आदि मे पौधों एवं पौधो के जीवन का विस्तृत वर्णन है

ऋग्वेदः–

ऋग्वेद मे वनस्पति का बहुत ही दिव्य, औषधीय एवं आदरणीय वर्णन है। ऋग्वेद के 10 वे मंडल मे औषधियों के ''दिव्य माता'' माना गया है। जो रोगों से मुक्त करती है। ऋग्वेद में वनस्पति को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। वृक्ष (पेड), औषधी (मनुष्यों के लिए उपयोगी जड़ी–बूटी) एवं विरुद्ध (लताएँ), विशाखा (झाड़ियाँ), शाकाहार (जड़ी–बूटियाँ), ब्रवति (लताएँ), प्रातनवती (ऊपर चढ़ने वाली लताएँ), आलस्य (जमीन मे फैलने वाले) में उपविभाजित किया गया है। घासों को (तृण), पुष्पवती (पुष्पीय पौधे) एवं फलवती (फलदायी पौधे) को कहा गया है।

अर्थववेद :–

अर्थववेद में वनों एवं वनस्पतियों को सुखदायी एवं समस्त प्राणियों का भरण–पोषण करने वाला कहा गया है। इसमें वन को ''अरण्यानी'' कहकर संबोधित किया गया है एवं इसे औषधीय विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

अर्थववेद मे वनस्पतियो को कई वर्गो मे विभाजित किया गया है – विशाखा (फैली हुई शाखाओं वालेपौंधे), मंजरी (लंबे गुच्छों वाले पौधे), स्तभिणी (झाड़ीदार पौधे), प्रास्थानवती (जमीन मे फैलने वाली लताएँ एवं बेल), अंशुमती (कई शाखाओं वाले पौधे), काण्डिनी (गांठदार पौधे), वृक्ष (बड़े पेड़), शाक (जड़ी–बूटियाँ)।

वैदिक काल में सबसे उल्लेखित पौधा पीपल (*Ficus religiosa*) है, इसके अतरिक्त समी (*Prosopis Cineraria*), आँवला (*Emblica officinalis*), पलास (*Butea monas perma*) विल्ब (*Aegle marmelos*) जैसे आदि वनस्पति का उल्लेख मिलता है।

वेदो में वनस्पति की अवधारणा :–

वैदिक वनस्पति शास्त्र प्राचीन भारतीय ज्ञान की वह शाखा है जो पौधों, वृक्षों और जड़ी बूटियो के औषधीय और आध्यात्मिक पहलुओ का अध्ययन करती है। वैदिक ग्रंथों में वृक्षादि को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण वन सम्पदा, वनस्पति जगत वृक्षों को भी ''वन्दनीय'' एवं ''पूज्यनीय'' कहा गया है।

वैदिक ज्ञान हमे वनस्पति की रक्षा एवं संरक्षण की शिक्षा देती है। साथ ही प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करती है। उपनिषदो मे पेड–पौधो को प्राण तत्व मानकर उन्हें ''चेतन जीव'' की तरह माना गया है साथ ही जीवनदायी माना गया है।

भारतीय लोक वनस्पति में पादपों की भूमिका:–

लोक वनस्पति विज्ञान की वैज्ञानिक अवधारणा एवं पावर्स (1874) एवं परिभाषा हर्श बर्गर (1895) मे दी लेकिन भारत में लोकवनस्पति विज्ञान की बुनियाद यूरोपीय

वैज्ञानिक गार्सिया दा ओर्टा (1563) ने डाली। इन्होंने भारत मे पायी जाने वाली 50 औषधीय महत्व वाले पौधे एवं वनस्पतियों का उल्लेख किया जो भारत के मलाबार तट के क्षेत्रों में पायी जाती है। बीसवीं शताब्दी का मध्यकाल भारत मे लोक वनस्पति विज्ञान की दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। डॉ जानकी अम्माल, डॉ. एस. के. जैन आदि ने लोकवनस्पति विज्ञान के उत्थान में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

कुछ प्रमुख लोकवानस्पतिक औषधीय पौधे एवं उनके औषधीय उपयोग :–

1. अडूसा (*Adhatoda vasica*) – कफ, अस्थमा का उपचार
2. ब्राम्ही (*Bacopa Monniera*) – याददाश्त बढ़ाने, तनाव दूर करने में
3. कालमेघ (*Andrographi's Paniculata*) अपच, दर्द के उपचार में
4. तुलसी (*Ocimum sanctum*) – सर्दी, खाँसी, श्वसन विकारों के उपचार मे
5. नीम (*Azadirachta indica*) – चर्म रोग, रक्त शुद्धिकरण में
6. शतावर (*Asparagus racemosus*) – बांझपन एवं प्रजनन संबंधी विकारों के उपचार में
7. अश्वगंधा (*withania somnifera*) दमा, सर्दी, श्वसन संबंधी विकारों में
8. बेल (*fregle marmelos*) – उदर संबंधी रोगों के उपचार में
9. हल्दी (*Curcuma Longa*) - प्रतिजैविक गुण उपस्थित
10. गिलोय (*Tinospora Cardifolia*) – शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढाता है।

निष्कर्ष :–

भारत के प्राचीन साहित्य, लिखित ग्रंथों एवं पुस्तकों के दस्तावेजों के आधार पर यह निष्कर्ष किया जा सकता है कि पौधों का अध्ययन एवं उसकी उपयोगिता का अध्ययन वैदिक काल से विकसित था । इस बात के पर्याप्त प्रमाण है कि वैदिक काल मे कृषि, चिकित्सा, बागवानी का व्यापक विकास हुआ। वेदों मे उल्लेखित है कि भारतीयों को खाद्य उत्पादन, प्रकाश का प्रभाव, पौधो मे ऊर्जा के भंडार की भी जानकारी थी। वैदिक काल के पश्चात अरस्तु (384 - 322 BC), थियोफ्रास्टस (370 -

287 BC), हिप्पोकैटस (460 - 370 BC), आदि आधुनिक वैज्ञानिक आए और इन्ही वेदी, पुराणों मे उल्लेखित पौधों के आधार पर औषधीय पादपों का वर्णन किया गया। अर्थात वनस्पति विज्ञान केवल प्रयोगशाला का विषय नहीं बल्कि प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीने की एक जीवन शैली है।

बीज शब्द (Keywords) :–

औषधी, संरक्षण, पर्यावरण, संतुलन, लोकवनस्पति

संदर्भ :– .

1. Ghose, A-K. 1971. Botany: prehistoric period. In a concise History of science in India.
2. Prasad, J. S. R. A. : - Botanical Science in Sanskrit literature & Exploring its Contemporary relevance.
3. Rajan, S. Sundara, 2001. Plant Science In medicine and life science in India.
4. Jain, S.K. and etal. (1981) : Notable plants of Indian medicine of India.
5. Pal and Jain (1998) – Tribal medicine.

===//===//===//===